P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-9* May- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

सामान्य किशोरों एवं अपराधी किशोरों के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन

लीलेश गुप्ता
पूर्व प्राचार्य,
ज.ने. शि. प्रशि. महाविद्यालय,
कोटा, राजस्थान
भारत

श्याम बाबू
शोधार्थी,
शिक्षाशास्त्र
कैरियर पॉइन्ट यूनिवर्सिटी,
कोटा, राजस्थान
भारत

सारांश

किशोरावस्था मानव जीवन की बहुत महत्वपूर्ण अवस्था होती है। इस अवस्था में बालक बनते बिगड़ते है इनमें नवीन भावनाओं, नवीन शक्तियों और रुचियों का उदय होता है। यदि बालक का अच्छा मार्गदर्शन हो जाता है तो उसका व्यक्तित्व बन जाता है अन्यथा उसे बिगड़ने में देर नहीं लगती है। किशोरावस्था बालक का वह काल होता है जिसमें वह कल्पनाओं के झरोखे में बैठकर ऊँचे–ऊँचे सपने व उड़ाने भरता है इस अवस्था में वह शारीरिक एवं मानसिक रूप से इतना परिपक्व हो जाता है कि उसमें संतान उत्पन्न करने सम्बन्धी गुण विकसित हो जाते है। इस समय सांवेगिक विकास की गति तीव्र होती है लगभग सभी संवेग इस अवस्था में विकसित हो चुके होते है। यह अवस्था संघर्ष, तनाव एवं उफान की होती है। मानव मस्तिष्क शरीर का इतना महत्वपूर्ण भाग होता है कि इसकी सहायता के बिना शरीर का कोई भी कार्य नहीं हो सकता है। यदि हमारा मस्तिष्क स्वस्थ है तो हमारा जीवन सुखी होता है अन्यथा जीवन में दुख ही दुख होते है। शारीरिक स्वास्थ्य मानसिक स्वास्थ्य पर निर्भर करता है। मेड़ल के अनुसार– ''मानसिक स्वास्थ्य वास्तविकता के धरातल पर वातावरण से पर्याप्त सामंजस्य करने की योग्यता होती है।'' कुप्पूस्वामी के अनुसार – ''मानसिक स्वास्थ्य दैनिक जीवन में भावनाओं, इच्छाओं, महत्वकांक्षाओं और आदर्शो में संतुलन रखने की योग्यता होती है।'' शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य प्राप्त करते हुए व्यक्तित्व का विकास करने की दृष्टि से सन् 1908 में डबल्यू. सी बीयर्स ने एक ''मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान'' समिति की स्थापना की। क्रो एण्ड क्रो के अनुसार ''मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान वह विज्ञान है जिसका सम्बन्ध मानव कल्याण से होता है और जो मानव सम्बन्धों के सब क्षेत्रों को प्रभावित करता है। मानसिक स्वास्थ्य व्यक्ति के उस व्यवहार को व्यक्त करता है जिसका शरीर और मस्तिष्क एक ही दिशा में साथ–साथ कार्य करते है। सुजीत कुमार (2003). ''किशोरों के मानसिक स्वास्थ्य का मनोशारीरिक अध्ययन'' ने निष्कर्ष निकाला कि किशोरों के मानसिक स्वास्थ्य को भग्न परिवार, परिवार का अनैतिक वातावरण, मनोरंजन के साधनों का अभाव इत्यादि प्रभावित करते है। WHO की रिपोर्ट में बताया कि किशोरों के मानसिक स्वास्थ्य पर सामाजिक स्थिति, पारिवारिक स्थिति, स्कूल के वातावरण का प्रभाव होता है। जब किशोर निर्धारित किये गये लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर पाता है तो वह अनुचित तरीके से इस लक्ष्य को प्राप्त करना चाहता है और वह समाजविरोधी कार्य करने लगता है। उसका मानसिक स्वास्थ्य खराब रहने लगता है विघटित परिवारों के किशोर तनाव, अवसाद, अर्न्तद्वन्द्व, मानसिक बिमारी और अपराध की प्रवृत्ति से ग्रसित होते है परीक्षा सम्बन्धी चिन्ता किशोरों को मानसिक तनाव में रखती है जिससे किशोरों में थकान रहने लगती है अनिद्रा की समस्या शुरू हो जाती है। एकाग्रता में कमी आने लगती है। मांसपेशियों में खिचाव, सिरदर्द की शिकायत, घबराहट, काम में अरूचि होने लगती है। वह इनसे बचने के लिए नशा करने लगता है। ऐसे किशोर परिजनों से दूर रहने लगते है, छोटी–छोटी बातों पर झगड़ने लगते है और अपराध करने की ओर प्रवृत्त हो जाते है।

मुख्य शब्द : किशोरावस्था, मानसिक स्वास्थ्य, मनोशारीरिक अध्ययन।

प्रस्तावना

किशोरों में असीम शक्ति व सृजनात्मकता होती है। यदि इन शक्तियों को सही दिशाओं में मार्गान्तरीकरण नहीं किया जावे तो वह गलत दिशाओं में भटक जाती है फलस्वरूप किशोर आत्महत्या या अपराध करने की और प्रवृत्त हो जाते है। इसलिए शोधकर्ता का ध्यान इस ओर आकर्षित हुआ है कि वे कौन से कारण हो सकते है जिससे किशोर अपराध करने की ओर प्रवृत्त होते है? क्या

उनका मानसिक स्वास्थ्य ठीक नहीं होता है? क्या उनसे समायोजन करने की क्षमता कम होती है? क्या उनमें स्वाभिमान की भावना का विकास हो जाता है? क्या वह अध्यापक माता–पिता के नियन्त्रण में रहना पसन्द नहीं करते है? क्या वह रीतिरिवाजों, विश्वासो, रूढ़ियों के बंधन में रहना पसन्द नहीं करते है? उपरोक्त परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए शोधकर्ता ने शोधकार्य के लिए ''सामान्य किशोर एवं अपराधी किशोर के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन।'' का चयन किया क्योंकि यह अवस्था शारीरिक एवं मानसिक विकास में महत्वपूर्ण स्थान रखती है। मानसिक स्वास्थ्य व्यक्ति के उस व्यवहार को व्यक्त करता है जिसका शरीर और मस्तिष्क एक ही दिशा में साथ– साथ कार्य करते है, उसके विचार, भावनाऐं और क्रियाऐं एक ही उद्देश्य की ओर सम्मिलित रूप से कार्य करती है। यह कार्य की आदतों, व्यक्तियों तथा वस्तुओं के प्रति दृष्टिकोण को व्यक्त करता है। मानसिक अस्वस्थता वर्तमान समय की सामान्य समस्या है। यह अधिकतर युवावस्था में होती है। यह समस्या परिवार सम्बन्धी, व्यवसाय सम्बन्धी, शैक्षणिक स्तर के अलावा भी विभिन्न स्तरों पर मिलती है। मेडिकल साइन्स के शोध में यह तथ्य सामने आया कि वयस्क व्यक्तियों में से एक तिहाई व्यक्तियों का व्यवहार सामान्य नहीं होता है। इन व्यक्तियों में मानसिक दुर्बलता पायी जाती है।

साहित्यावलोकन

इस विषय से सम्बन्धित अनेक शोध अध्ययन हुए है।

सपना चौधरी (2018): विभिन्न संकाय के विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का तुलनात्मक अध्ययन।

सम्यक जैन (2017) : सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन।

कमलेश 2016). : Child Psychiatry in New Delhi. मनोज (2016) : A study of relationship of emotional intelligence with adjustment and achievement among Senior Secondary Student. वृन्दा

सिंह (2009) : बाल अपराध व समायोजन। शेर एच (2000) : जुवेनाइल डेलिन वेन्सी इन बॉम्बे स्टेट।

शोध का शीर्षक

सामान्य किशोर एवं अपराधी किशोर के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन।

अध्ययन के उद्देश्य

1. सामान्य किशोरों एवं अपराधी किशोरों के भावनात्मक स्थिरता का अध्ययन
2. सामान्य किशोरों एवं अपराधी किशोरों के समायोजन का अध्ययन करना।
3. सामान्य किशोरों एवं अपराधी किशोरों की स्वायत्ता का अध्ययन करना।
4. सामान्य किशोरों एवं अपराधी किशोरों की सुरक्षा–असुरक्षा की भावना का अध्ययन करना।
5. सामान्य किशोरों एवं अपराधी किशोरों के आत्मप्रत्यय का अध्ययन करना
6. सामान्य किशोरों एवं अपराधी किशोरों की बुद्धि का अध्ययन करना।
7. सामान्य किशोरों एवं अपराधी किशोरों के मानसिक स्वास्थ्य (कुल) का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएं

1. सामान्य किशोरों एवं अपराधी किशोरों के भावनात्मक स्थिरता में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
2. सामान्य किशोरों एवं अपराधी किशोरों के समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
3. सामान्य किशोरों एवं अपराधी किशोरों की स्वायत्ता में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
4. सामान्य किशोरों एवं अपराधी किशोरों की सुरक्षा–असुरक्षा की भावना में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
5. सामान्य किशोरों एवं अपराधी किशोरों के आत्म–प्रत्यय में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
6. सामान्य किशोरों एवं अपराधी किशोरों की बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं होता है।
7. सामान्य किशोरों एवं अपराधी किशोरों के मानसिक स्वास्थ्य (कुल) में सार्थक अन्तर नहीं होता है।

शोध अध्ययन का सीमांकन

प्रस्तुत शोध अध्ययन में राजस्थान के बून्दी, कोटा, बाँरा, झालावाड़ जिले के किशोरों को सम्मिलित किया गया है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या व न्यादर्श

प्रस्तुत शोध अध्ययन में राजस्थान के बून्दीं, कोटा, बाँरा, झालावाड़ जिले के कुल 400 किशोरों को सम्मिलित किया गया जिनमें 200 सामान्य किशोर तथा 200 अपराधी किशोर है।

सामान्य किशोरो का चयन बून्दीं, कोटा, बाँरा, झालावाड़ के सरकारी व निजी विद्यालय एवं अपराधी किशोरों का चयन उपरोक्त जिलों में स्थित बालसुधार गृहों से किया गया।

शोध उपकरण

आकड़ों के संग्रहण हेतु प्रमापीकृत मानसिक स्वास्थ्य प्रश्नावली (अरूण कुमार सिंह, पटना यूनिवर्सिटी, पटना) का प्रयोग किया गया। प्रश्नावली में छः आयामों को सम्मिलित किया गया है।

1. भावनात्मक स्थिरता
2. समायोजन
3. स्वायत्ता
4. सुरक्षा–असुरक्षा की भावना
5. आत्म–प्रत्यय
6. बुद्धि

जिनमें कुल 130 प्रश्न है, प्रत्येक प्रश्न एक अंक का है।

शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी

प्रस्तुत शोध अध्ययन में निर्धारित उद्देश्य एवं परिकल्पनाओं के परीक्षण हेतु मध्यमान, मानक विचलन,

मध्यमानों में सार्थकता के अन्तर हेतु 't' मूल्य का प्रयोग किया गया।

विश्लेषण एवं व्याख्या

उद्देश्य

सामान्य किशोरों एवं अपराधी किशोरों के भावनात्मक स्थिरता का अध्ययन।

सारणी –1

सामान्य किशोरों एवं अपराधी किशोरो के भावनात्मक स्थिरता के मध्यमान में सार्थकता का अन्तर

समूह	N	M	SD	't'	सार्थकता का स्तर
सामान्य किशोर	200	10.09	2.05	8.32	0.01 सार्थक है
अपराधी किशोर	200	8.15	2.59		

सामान्य किशोरों एवं अपराधी किशोरों के भावनात्मक स्थिरता का मध्यमान 10.09 तथा 8.15 तथा प्रमाप विचलन 2.05 तथा 2.59 प्राप्त हुआ, इनसे प्राप्त 't' का मान 8.32 पाया गया जो सार्थकता स्तर 0.01 पर सारणीयन मान से अधिक है। शून्य परिकल्पना–''सामान्य किशोरों एवं अपराधी किशोरों के भावनात्मक स्थिरता में सार्थक अन्तर नहीं होता है।'' को अस्वीकृत किया जाता है। सामान्य किशोरों एवं अपराधी किशोरों के भावनात्मक स्थिरता की तुलना करने पर सामान्य किशोरों में भावनात्मक स्थिरता का मध्यमान अपराधी किशोरों से अधिक पाया गया। इससे स्पष्ट होता है कि सामान्य किशोरों में भावनात्मक स्थिरता, अपराधी किशोरों से अधिक होती है। सामान्य किशोरों के परिवार का वातावरण स्वस्थ, सहयोगी, प्रेरणादायक होता है जिससे सामान्य किशोर भावनात्मक रूप से अधिक मजबूत होते है। जबकि अपराधी किशोर बिखरे हुए परिवारों, माता–पिता के मध्य झगड़े होना, घर से दूर रहना, परिवार का कठोर अनुशासन होता है जिससे ये भावनात्मक रूप से अस्थिर होते है।

उद्देश्य

सामान्य किशोरों एवं अपराधी किशोरों के समायोजन का अध्ययन।

सारणी–2

सामान्य किशोरों एवं अपराधी किशोरों के समायोजन के मध्यमान में सार्थकता का अन्तर।

समूह	N	M	SD	't'	सार्थकता का स्तर
सामान्य किशोर	200	29.0	4.03	12.05	0.01 सार्थक है
अपराधी किशोर	200	23.6	4.9		

सामान्य किशोरों एवं अपराधी किशोरों के समायोजन का मध्यमान 29 तथा 23.6 तथा प्रमाप विचलन 4.03 तथा 4.9 प्राप्त हुआ, इनसे प्राप्त 't' का मान 12.05 पाया गया जो सार्थकता स्तर 0.01 पर सारणीयन मान से अधिक है। शून्य परिकल्पना–''सामान्य किशोरों एवं अपराधी किशोरों के समायोजन में सार्थक अन्तर नहीं होता है।'' को अस्वीकृत किया जाता है। सामान्य किशोरों एवं अपराधी किशोरों के समायोजन के मध्यमानों की तुलना करने पर सामान्य किशोरों के समायोजन का मध्यमान अपराधी किशोरों के समायोजन के मध्यमान से अधिक पाया गया। इससे स्पष्ट होता है कि सामान्य किशोरों का समायोजन, अपराधी किशोरों के समायोजन से अधिक होता है क्योंकि सामान्य किशोर परिवार व समाज में रहकर अपना अधिकांश समय व्यतीत करते है जिसके कारण उनका स्वभाव बर्हिमुखी हो जाता है। सामान्य परिवार में उत्तम वातावरण उनको अपने विचार, रुचियों को अभिव्यक्त करने का अवसर व परिवार में उनकी समस्याओं का समाधान होता है। जबकि अपराधी किशोर कम समायोजन कर पाते है क्योंकि इनके परिवार का अभावग्रस्त वातावरण, परिवार की निर्धनता, आकांक्षाओं का पूर्ण न होना आदि कारण उसे कुसमायोजित कर देते है।

उद्देश्य

सामान्य किशोरों एवं अपराधी किशोरों के स्वायत्ता का अध्ययन।

सारणी–3

सामान्य किशोरों एवं अपराधी किशोरों के स्वायत्ता के मध्यमान में सार्थकता का अन्तर

समूह	N	M	SD	't'	सार्थकता का स्तर
सामान्य किशोर	200	11.46	1.80	10.69	0.01 सार्थक है
अपराधी किशोर	200	8.82	2.99		

सामान्य किशोरों एवं अपराधी किशोरों के स्वायत्ता का मध्यमान 11.46 तथा 8.82 तथा प्रमाप विचलन 1.80 तथा 2.99 प्राप्त हुआ, इनसे प्राप्त 't' का मान 10.69 पाया गया जो सार्थकता स्तर 0.01 पर सारणीयन मान से अधिक है। शून्य परिकल्पना ''सामान्य किशोरों एवं अपराधी किशोरों की स्वायत्ता में सार्थक अन्तर नहीं होता है।'' को अस्वीकृत किया जाता है। सामान्य किशोरों एवं अपराधी किशोरों के 'स्वायत्ता' के मध्यमानों की तुलना करने पर सामान्य किशोरों के 'स्वायत्ता' का मध्यमान अपराधी किशोरों के 'स्वायत्ता' के मध्यमान से अधिक पाया गया। इससे स्पष्ट होता है कि सामान्य किशोरों की स्वायत्ता, अपराधी किशोरों की 'स्वायत्ता' से अधिक होती है। सामान्य किशोरों को स्वंय पर विश्वास, अनुभव और कार्य के प्रति जिज्ञासा होती है जिससे वह आसानी से निर्णय ले लेता है। अपराधी किशोरों का स्वयं पर अविश्वास, अधिक मानसिक दबाव, निर्धनता, बिखरते परिवार के असहयोगी वातावरण के कारण वह स्वतन्त्रतापूर्वक निर्णय नहीं ले पाते है।

उद्देश्य

सामान्य किशोरों एवं अपराधी किशोरों में सुरक्षा–असुरक्षा की भावना का मध्यमान।

सारणी–4

सामान्य किशोरों एवं अपराधी किशोरों में सुरक्षा–असुरक्षा की भावना के मध्यमान में सार्थकता का अन्तर।

समूह	N	M	SD(σ)	't'	सार्थकता का स्तर
सामान्य किशोर	200	10.67	2.13	5.27	0.01 सार्थक है
अपराधी किशोर	200	9.29	3.03		

सामान्य किशोरों एवं अपराधी किशोरों के सुरक्षा–असुरक्षा की भावना का मध्यमान 10.67 तथा 9.29 तथा प्रमाप विचलन 2.13 तथा 3.03 प्राप्त हुआ, इनसे प्राप्त 't' का मान 5.27 पाया गया जो सार्थकता स्तर 0.01 पर सारणीयन मान से अधिक है। शून्य परिकल्पना ''सामान्य किशोरों एवं अपराधी किशोरों की सुरक्षा असुरक्षा की भावना में सार्थक अन्तर नहीं होता है।'' को अस्वीकृत किया जाता है। सामान्य किशोरों एवं अपराधी किशोरों के सुरक्षा असुरक्षा की भावना के मध्यमानों की तुलना करने पर सामान्य किशोरों को सुरक्षा असुरक्षा की भावना का मध्यमान, अपराधी किशोरों के सुरक्षा–असुरक्षा की भावना के मध्यमान से अधिक होता है। इससे स्पष्ट होता है कि सामान्य किशोरों में सुरक्षा–असुरक्षा की भावना अपराधी किशोरों की सुरक्षा–असुरक्षा की भावना से अधिक होती है। सामान्य किशोरों का वर्तमान तथा भविष्य के बारे में डर व चिन्ता कम होती है। सामान्य किशोरों के पास उनके कैरियर के बारे में सम्पूर्ण कार्य योजना होती है कि उनको भविष्य में क्या करना है? उसे माता–पिता का मार्गदर्शन प्राप्त होता है। जबकि अपराधी किशोर स्वयं को असुरक्षित अनुभव करता है, वह भविष्य के बारे में अनिश्चित रहता है, उसका मानसिक विकास नहीं हो पाता है, वह स्वतन्त्रतापूर्वक कार्य करने में असमर्थ अनुभव करता है, एवं उसमें आत्मविश्वास का अभाव होता है।

उद्देश्य

सामान्य किशोरों एवं अपराधी किशोरों के 'आत्म प्रत्यय का अध्ययन।

सारणी–5

सामान्य किशोरों एवं अपराधी किशोरों के 'आत्म प्रत्यय' के मध्यमान में सार्थकता का अन्तर।

समूह	N	M	SD	't'	सार्थकता का स्तर
सामान्य किशोर	200	10.01	1.79	11.26	0.01 सार्थक है
अपराधी किशोर	200	7.51	2.58		

सामान्य किशोरों एवं अपराधी किशोरों के आत्म प्रत्यय का मध्यमान 10.01 तथा 7.51 तथा प्रमाप विचलन 1.79 तथा 2.58 प्राप्त हुआ, इनसे प्राप्त 't' का मान 11.26 पाया गया जो सार्थकता स्तर 0.01 पर सारणीयन मान से अधिक है। शून्य परिकल्पना ''सामान्य किशोरों एवं अपराधी किशोरों के आत्म–प्रत्यय में सार्थक अन्तर नहीं होता है।'' को अस्वीकृत किया जाता है। सामान्य किशोरों एवं अपराधी किशोरों के आत्म–प्रत्यय के मध्यमानों की तुलना करने पर पाते है कि सामान्य किशोरों के आत्म प्रत्यय का मध्यमान अपराधी किशोरों के आत्मप्रत्यय के मध्यमान से अधिक पाया गया। इससे स्पष्ट होता है कि सामान्य किशोरों का आत्म–प्रत्यय, अपराधी किशोरों के आत्म–प्रत्यय से अधिक होता है। सामान्य किशोर अपनी उपलब्धियों का मूल्यांकन स्वंय के प्रति अभिवृत्ति एवं ज्ञान, निष्पक्ष तरीके से करता है इसे स्वंय के ऊपर विश्वास होता है। जबकि अपराधी किशोर अस्थिर मानसिकता वाले एवं अविश्वासी होते है।

उद्देश्य

सामान्य किशोरों एवं अपराधी किशोरों की बुद्धि का अध्ययन।

सारणी–6

सामान्य किशोरों एवं अपराधी किशोरों की बुद्धि के मध्यमान में सार्थकता का अन्तर

समूह	N	M	SD	't'	सार्थकता का स्तर
सामान्य किशोर	200	17.15	4.2	12.96	0.01 सार्थक है
अपराधी किशोर	200	11.55	4.43		

सामान्य किशोरों एवं अपराधी किशोरों की बुद्धि का मध्यमान 17.15 तथा 11.55 तथा प्रमाप विचलन 4.2 तथा 4.43 प्राप्त हुआ, इनसे प्राप्त 't' का मान 12.96 पाया गया जो सार्थकता स्तर 0.01 पर सारणीयन मान से अधिक है। यह 0.01 स्तर पर सार्थक है। शून्य परिकल्पना ''सामान्य किशोरों एवं अपराधी किशोरों की बुद्धि में सार्थक अन्तर नहीं होता है।'' को अस्वीकृत किया जाता है। सामान्य किशोरों एवं अपराधी किशोरों की बुद्धि के मध्यमानों की तुलना करने पर पाते है कि सामान्य किशोरों की बुद्धि का मध्यमान, अपराधी किशोरों की बुद्धि के मध्यमान से अधिक होता है। इससे स्पष्ट होता है कि सामान्य किशोरों की बुद्धि अपराधी किशोरों की बुद्धि से अधिक होती है। सामान्य किशोरों में अनुभव से लाभ उठाने की योग्यता होती है। ये किसी भी प्रकार के वातावरण से सामंजस्य कर सकते है क्योंकि इनमें अमूर्त चिन्तन की योग्यता होती है, सीखने की योग्यता होती है। जबकि अपराधी किशोरों की बुद्धि तो अच्छी होती है। इनकी शैक्षिक उपलब्धि भी उत्तम होती है किन्तु ये विपरीत परिपस्थितियों के कारण अपराध की ओर प्रवृत्त हो जाते है।

उद्देश्य

सामान्य किशोरों एवं अपराधी किशोरों के मानसिक स्वास्थ्य (कुल) का अध्ययन।

सारणी–7

सामान्य किशोरों एवं अपराधी किशोरों के मानसिक स्वास्थ्य (कुल) के मध्यमान में सार्थकता का अन्तर

समूह	N	M	SD	't'	सार्थकता स्तर
सामान्य किशोर	200	85.3	8.75	15.94	0.01 सार्थक है
अपराधी किशोर	200	69.0	11.52		

सामान्य किशोरों एवं अपराधी किशोरों की मानसिक स्वास्थ्य का मध्यमान 85.3 तथा 69.0 तथा प्रमाप विचलन 8.75 तथा 11.52 प्राप्त हुआ, इनसे प्राप्त 't' का मान 15.94 पाया गया जो सार्थकता स्तर 0.01 पर सारणीयन मान से अधिक है। शून्य परिकल्पना ''सामान्य किशोरों एवं अपराधी किशोरों के मानसिक स्वास्थ्य में सार्थक अन्तर नहीं होता है।'' को अस्वीकृत किया जाता है। सामान्य किशोरों एवं अपराधी किशोरों के मानसिक स्वास्थ्य के मध्यमानों की तुलना करने पर पाते है कि सामान्य किशोरों के मानसिक स्वास्थ्य का मध्यमान, अपराधी किशोरों के मानसिक स्वास्थ्य के मध्यमान से अधिक पाया गया। उससे स्पष्ट होता है कि सामान्य किशोरों का मानसिक स्वास्थ्य, अपराधी किशोरों के मानसिक स्वास्थ्य से अधिक होता है। क्योंकि सामान्य किशोर स्वंय से संतुष्ट, पर्यावरण तथा परिस्थितियों से लाभ उठाने की योग्यता, परिस्थितियों का ज्ञान, नियन्त्रण, अनुकुल वातावरण युक्त होते है जिससे उनका अच्छा मानसिक स्वास्थ्य होता है। जबकि अपराधी किशोर आनुवांशिक कारण, शारीरिक कारण, सामाजिक कारण, विद्यालय सम्बन्धी कारणों की वजह से कमजोर मानसिक स्वास्थ्य वाले होते है।

निष्कर्ष

शोध अध्ययन मानसिक स्वास्थ्य के विभिन्न आयामों के निष्कर्ष निम्नलिखित है :

1. सामान्य किशोरों में भावनात्मक स्थिरता, अपराधी किशोरों से अधिक होता है।
2. सामान्य किशोरों में समायोजन अपराधी किशोरों से अधिक होता है।
3. सामान्य किशोरों में स्वायत्ता अपराधी किशोरों से अधिक होती है।
4. सामान्य किशोरों में सुरक्षा असुरक्षा की भावना अपराधी किशोरों से अधिक होती है।
5. सामान्य किशोरों में आत्मप्रत्यय अपराधी किशोरों से अधिक होता है।
6. सामान्य किशोरों में बुद्धि अपराधी किशोरों से अधिक होती है।
7. सामान्य किशोरों का मानसिक स्वास्थ्य, अपराधी किशोरों से अधिक होता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

शेर एच (2000): जूवेनाइल डेलिन वेन्सी इन बॉम्बे स्टेट।

पी.डी. पाठक (2004): शिक्षा मनोविज्ञान।

वृन्दा सिंह (2009): बाल अपराध व समायोजन।

सामाजिक चिन्तन (2015) : Institute of Social Research and development. (U.P.)

खुराना (2015) : किशोरों के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन।

बंसल गीता (2016): किशोर स्वास्थ्य विशेषांक–4 निष्ठा फाउन्डेशन, कोटा।

विवेक त्रिपाठी (2017) : असामान्य मनोविज्ञान, भ्च भार्गव बुक हाउस, आगरा।

भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका (2018): भारतीय शिक्षा शोध संस्थान, लखनऊ।

एल एन खत्री (2018): Prevelance and Pattern of Mental Health Problem.

Buch MB (1993-1996) : Sixth Survey of Educational Research Vol-VI NCERT.

Buch MB (1993-2000) : Sixth Survey of Educational Research Vol-I (NCERT).

Govt of India (2005) : Ministry of Information on Broadcasting.

Govt of India (2008) : Eleventh five year plan (2007-2012).

Social Factor Volume-II planning Commission, Oxford University press, New Delhi.